मीरा बहन और बाघ पाठ का सारांश

मीरा बहन और बाघ

मीरा बहन और बाघ पाठ में मीरा बहन की अहिंसा के बारे में बताया गया है। मीरा बहन का जन्म इंग्लैंड में हुआ था। गाँधी जी के विचारों के कारण वे अपना परिवार को छोड़ छाड़ कर गाँधी जी के साथ काम करने लगी। आजादी के बाद वे उत्तर प्रदेश के एक पहाड़ी गाँव गेवली में गोपाल आश्रम की स्थापना करके रहने लगी। वे अपना सारा समय पालतू जानवरों की सेवा में बिताने लगी। गेवली गाँव के आसपास के जंगलो में बाघ का खतरा था। वह किसानों के पालतू जानवरों का भी शिकार करने लगा। उसने एक गाय को भी मार डाला।

गाँव के लोग गोपाल आश्रम में गए और उन्होंने अपनी समस्या मीरा बहन को बताई। गाँव के लोगों ने तय किया कि बाघ को कैद किया जाए। कैद करने के लिए एक पिंजरा बनाया गया और उसके अन्दर एक बकरी रखी गयी। जैसे ही बाघ अन्दर घुसता ,वह दरवाजा बंद हो जाता। पिंजरे को ऐसी जगह रखा गया ,जहाँ बाघ अक्सर आता - जाता रहता है। रात बीतने के बाद लोग सुबह जब पहुंचे तो देखा कि पिंजरे का दरवाजा बंद है ,लेकिन अन्दर बाघ नहीं था। लोग बहुत हैरान हो गए थे कि बिना बाघ के अंदर आये बिना पिंजरा बंद कैसा हो गया। गाँव वाले मीरा बहन के पास गए और अपनी समस्या बताई तो बहन ने कहा कि मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं सोचती रही कि बाघ को धोखा देकर हम बाघ को क्यों फसायें ,इसीलिए मैं स्वयं पिंजरे का दरवाजा बंद कर आई।